Rotary Club of Pune Sahawas

RI District 3131 Club No. 83055

मैत्र

जे खळांची व्यंकटी सांडो । तया सत्कर्मी रती वाढो ।।
भूतां परस्परे पडो । मैत्र जीवांचे ।।

President :
Rtn. Ajay Mutatkar
Mob :84509 79679
ajaymutatkar@gmail.com

Secretary :
Rtn. Rahul Lale
Mob : 98814 04697
lale.rahul@gmail.co

Club Admin :
Rtn. Sudhir Vaidya
Mob : 95455 89697
sdvaidya1411@gmail.com

Editor :
Mr. Purushottam Mulay
Mob : 98233 64904
nipurtn@gmail.com

Team Maitra :
Ann Jayashree Dhupkar
Mob : 98506 60782
Rtn. Atul Joshi
Mob : 98812 98198

Year : 13 / Issue 2 | July, 2022 | For Internal Distribution

स्वरयात्री सुधीर फडके

यांना सादर वंदन

From The Desk of President

At the outset, I wish all my Sahawasiya Rotarians **A Very Happy New Year 2022-23**. Rotary has the tradition of beginning new year with new leader that is expected to bring new energy, enthusiasm and new thought process in the way things are done. It helps Rotary Grow in the long run. We began our new year on 1st July by organising 4 different events - Medical Check up Camp, Donation of Inverter Machine to Prasanna Autism Center, Workshop for aspiring CA students about the emerging Scenario in CA curriculum, Launch of Hindi Workshop for Inbound Foreign Students under RYE program.

We also had Training Cum Orientation Program for all our members conducted by our trainer Rtn. Prakash Avachat. It was very well received and appreciated by all members. Another landmark was distribution of Educational Library Books and Sports Equipment to Dnyanada School by Samrajya Housing Co-operative Society and its resident Mr. Purushottam Deshpande on his completing 75th year of life. We at Rotary appreciate any such magnanimity that changes lives among less privileged community. 'Guru Purnima' gave us an opportunity to hear Dr. Shirish Limaye on Importance of Gita in our Day-to-Day life. Fellowship in Rotary is broad conceot that gives an opportunity to members to interact, mix and share among themselves ideas, thoughts over a cup of tea.

District 3131 had great opportunity of hosting RI President, Jennifer Jones on 22nd July in Pune. Listening to her powerful speech was unfolding of new Rotary Policy, principles and philosophy. Her focus on Diversity, Equity & Inclusion is significant as it broadens your world by breaking borders & barriers, region & religions. Another highlight of her inspiring speech was emphasis on Member engagement by taking their care, ensuring their comfort and addressing their individual needs to ensure their retention.

Rotary also means fun, art and enjoyment. We had synergy programme with gandhibhavan club where in famous poet Sandeep Khare presented his poems which were enjoyed by hundreds of people.

I warmly welcome our new members - Anuja Joshi, Anuraag Fuley, Dnyanesh Lohokare, Nilesh Zoting, Pallavi Ingale, Seetaram Wadkar and Shekhar Dhamale. I can assure them they will Enjoy Rotary.

The month of August is not far behind. We have very Exciting August Month..Please do watch it and participate in our Program, Project and District Seminar planned on 6th August 2022 for Club Admin which we are hosting.

With best Wishes,

Rtn. Ajay Mutatkar
President, RCP Sahawas

From The Desk of Editor

नमस्कार मित्रांनो ,

या रोटरी वर्षाचा दुसरा अंक सादर करताना मला आनंद होत आहे. गेल्या अंकामध्ये आपण आपल्या सर्व बोर्ड ऑफ डिरेक्टर्सची ओळख करून घेतली, तसेच रो. सुधीर वैद्य यांची प्रेसिडेंट रोटरी इंटरनॅशनलची भेट आणि रो. नंदकुमार घुले यांची मेडिसन क्लब ची भेट विस्तृत केली.

या अंकामध्ये आपले नवीन प्रेसिडेंट रो. अजय मुटाटकर यांचा प्रतिष्ठापन सोहोळा, आपण गेल्या महिन्यात केलेले विविध प्रोजेक्ट्स आणि नवीन मेम्बर्सची माहिती करून घेत आहोत. दिनांक २५ जुलैला श्री. सुधीर फडके म्हणजे आपले लाडके बाबूजी यांची जन्मतिथी, त्या निमित्त त्यांच्यावर विशेष लेख आहेत.

मला विशेष करून सांगायचे आहे की आता आपला मैत्र' हा साधा फक्त वाचण्या सारखा असा नाही तर आता तो बोलणारा व गाणारा मैत्र' आहे, एवढेच नव्हे तर तो तुम्हाला सिनमा पण दाखवणारा आहे. या अंकामध्ये काही लिंक्स दिल्या आहेत त्यावर क्लिक करून तुम्ही या सर्वांचा आनंद लुटू शकता. उदारणार्थ, बाबूजींवरचा लेख वाचल्यावर तुम्हाला त्यांची गाणी ऐकायची असतील तर दिलेल्या लिंकवर क्लिक करा. बाबूजींच्या जीवनावरचा लघुपट बघायचा असेल तर त्याचीही लिंक दिली आहे. आपल्या क्लब मध्ये बाबूजींचे एक गाणे रो. राहुल लाळे आणि ॲन सौ. मधुरा गोडबोले यांनी सादर केले होते, आठवतेय कोणते? त्या गाण्याची लिंक दिली आहे, ती क्लिक केली तर तुम्हाला जुन्या आठवणी ताज्या करता येतील.

'मी सर्व सभासदांना आवाहन करतो की त्यांनी त्यांचे लेख, कविता,विनोद, पाककृती तसेच आपली व कुटुंबीयांची काही खास कामगिरी, असे सर्व साहित्य माझ्याकडे पाठवावे म्हणजे ते मैत्र' मध्ये प्रसिद्ध करता येईल. वरील गोष्टी आपण स्वतः लिहिलेल्या असाव्यात, केवळ संकलन नसावं ही विनंती. साहित्य पाठवतांना ते वर्ड फॉरमॅट मध्ये महिन्याच्या दिनांक २० च्या आत पाठवावे.

मैत्र टीम आपल्या क्लब चे यू ट्यु ब चॅनेल काढण्याच्या प्रयत्नात आहे. लवकरच त्याबद्दल कळवले जाईल. हा अंक काढतांना प्रेसिडेंट रो. अजय मुटाटकर, सेक्रेटरी रो. राहुल लाळे व आमची मैत्र टीम यांनी खूप मेहनत घेतली आहे त्याबद्दल त्यांचे धन्यवाद!

सर्व सभासदांना विनंती आहे की आपण हा आपला ''मैत्र' वेळात वेळ काढून वाचावा व आपला अभिप्राय कळवावा . धन्यवाद!

पुरुषोत्तम श्री. मुळे
संपादक

प्रतिष्ठापन समारोह

प्रतिष्ठापन समारोह – रोटरी सहवास
सबका साथ, सबका सहभाग, सबका विश्वास

Handing Over President' Collar

जिसका सबको था इंतज़ार, वो घड़ी आ गई ... जी हां आखिर रोटरी क्लब ऑफ पुणे सहवास के प्रेसिडेंट के रूप हमारे अजयजींका विधिवत प्रतिष्ठापन समारोह १९ जून को पी वाय सी, पुणे में सम्पन्न हुआ। डीजी–इ रो. डॉ. अनिल परमार, फर्स्ट लेडी रो. हेमा परमार, एजी–इ रो. टीना रात्रा, पीडीजी रो. दीपक शिकारपूर, रोटरी डिस्ट्रिक्ट पुणे के अनेक पदाधिकारी – रो. विवेक दीक्षित, रो. पंकज पटेल, रो. विलास रवांदे, रो. पल्लवी साबले, रो. वैशाली भागवत, रो. शोभा नाहर, अन्य रोटरी क्लब के पी–इ रो. उज्वल केले, रो. प्रज्ञा डांगे, रो. अभय सावंत, रो. पद्मजा जोशी, सहवासीय रोटेरियन, रिश्तेदार, मित्र, केनरा–मित्र आदि की उपस्थिति ने कार्यक्रम को अजयजींके लिये अविस्मरणीय, भाव–विभोर बनाया।

अजयजी वर्ष २०१८–१९ में रोटरी सहवासीय हुआ और २०१९–२० मेंही २०२२–२३ के लिये प्रेसीडेंटशिप के लिये नॉमिनेट हुए। रोटरी ११७ साल पुराना एक इंटरनेशनल क्लब है, जिसकी एक छबि है, साख है, परंपरा है और प्रतिष्ठा भी। रूल्स, रेगुलेशन, सिस्टम, प्रोसीजर का कड़ाई से पालन करने वाली रोटरी एक सेवाभावी एनजीओ है। हाल ही में ह्यूस्टन में हुए रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन का उदघाटन हमारे प्रधान मंत्री श्री. नरेन्द्र मोदीजी ने किया। गौरतलब है कि वर्ष २०२१–२२ रोटरी इंटरनेशनल प्रेसिडेंट होने का बहुमान भारतीय रो.शेखर मेहता को मिला।

खुशिया बांटने, मुस्कुराहटें बिखेरने और रोटरी का आनंद लेने का मंत्र इस वर्ष २०२२–२३ में हमारे गवर्नर रो. डॉ. अनिल परमार जी ने हमे दिया है। जब कोई रोटरी क्लब जॉइन करता है तब वह अपने व्यवसाय, नौकरी, जीवन की भागदौड़ से दूर कुछ समय अपने लिए बिताना चाहता है। थोड़ा एन्जॉय, थोड़ा एंटरटेन होना चाहता है। रोटरी क्लब सर्विस वो एवेन्यू है जो आपको फ्रेंडशिप, फ़ेलोशिप, नेटवर्किंग आदि का मौका देती है। हर व्यक्ति अपने साथ ज्ञान, कौशल, प्रतिभा, कला , क्रीड़ा का हुनर लाता है। रोटरी प्लेटफार्म आपकी इन्ही बहुरंगी, बहुढंगी शख्सियतो और उनके कलागुणो का ऐसीमिलेशन है। और यह सब करते हुऐ रोटेरियन कब पर्यावरण, स्वास्थ, साक्षरता, सामाजिक विकास जैसे क्षेत्रों में काम करने लगता है पता ही नही चलता।

Handing Over Secretary's Collar

एक आम आदमी की जिंदगी गुलजार साहब की जुबान में अगर कही जाये तो, जीने की वजह तो कोई नही...मरने का बहाना ढूंढता है इस तर्ज पर गुजर जाती है। रोटरी जैसे मकाम आपको कुछ करने, सोचने और कहने का मौका देते है जो सिर्फ आपको नही बल्कि आपके आसपास के माहौल, समुदाय, परिवार आदि में बदलाव और सकारात्मक सुधार ला सकते है, लाते है। रोटरी की कहानी इसी बदलाव की कहानी है।

मई २०१० को स्थापित रोटरी क्लब ऑफ पुणे सहवास एक एक्टिव और वाइब्रेंट क्लब के रूप में डिस्ट्रिक्ट पुणे में जाना जाता है। इस गति और ऊर्जा को आगे बनाये रखना और बढ़ाना हमारी जिम्मेदारी है। प्रेसिडेंट रो. महेंद्र चित्ते, सेक्रटरी रो. नंदकुमार घुले और उनकी टीम ने इस वर्ष उल्लेखनीय कार्य किया है। खास तौर पर मेडिकल क्षेत्र में सहवास को एक ब्रांड इमेज दी वो सराहनीय है। डायरेक्टर रो. किरण इंगले ने पहले ही दिन छह नये सदस्यों को टीम सहवास में शामिल किया – नीलेश ज़ोटिंग, अजित जोशी, अनुराग फुले, पल्लवी इंगले, शेखर धमाले, ज्ञानेश लोहकरे। फाउंडेशन डायरेक्टर रो. दिनकर पलस्कर ने एक नये हिरकणी ग्रुप की

Handing over Charter

'MAITRA' Publication

स्थापना की जिसकी सात वीरांगनायें– अपर्णा मुटाटकर , श्रद्धा पलस्कर, धनश्री जोशी, प्रतिभा जगदाले, ममता पटेल, पूजा कुलकर्णी, स्वाती कोठाडिया , रोटरी/नॉन–रोटरी घरों, परिवारों से मिलेंगी और रोटरी के उद्देश्यों का प्रसार करेंगी और फाउंडेशन को मजबूत करेंगी।

Transferring the Bell

मैत्र का प्रकाशन भी डीगी–इ रो. हुआ। हमारी नई टीम अन्ना और रो. अतुल जोशी ने मैत्र को बधाई ! रो. सुधीर वैद्य, रो. राहुल निवेदिता मुळे, रो. प्रतिभा जगदाळे, पंडित, रो. सी एल कुलकर्णी के के सुंदर नियोजन, सुचारू आयोजन

इस अवसर पर क्लब के न्यूज़लेटर डॉ. अनिल परमारके हाथों सम्पन्न पुरुषोत्तम मुळे, ॲन जयश्री धुपकर बहुत कम समय मे प्रकाशित किया। लाळे, रो. हेमंत गोडबोले, रो. ॲन दीप्ति गोड़बोले, रो. मिलिंद विशेष आभार – प्रतिष्ठापन समारोह और सरल संचालन के लिये!

इस अवसर पर टीम सहवास ने सशक्त प्रस्तुतिकरण किया। इसके के। रोटरी क्लब ऑफ पुणे सहवास राष्ट्रगान का वीडियो माध्यम से लिए आभारी है रो. सुनेत्रा मंकणी की पिछले १० वर्ष की लिखी कहानी को रो.प्रकाश अवचट और रो. राहुल लाळे ने वीडियो माध्यम से पेश की। इसके लिए डिस्ट्रिक्ट पब्लिक इमेज डायरेक्टर रो. जिग्नेश पंड्या को साधुवाद और रो. शुभांगी मुळे को धन्यवाद।

रोटरी सहवास में हुनर है, हौसला है । फ़ैसले की घड़ी अब आगे है। गुलजार की फ़िल्म माचिस का ओम पुरी का एक डॉयलॉग जो सबको हमेशा प्रेरित करता है!

" जिम्मेदारी आदमी को अच्छा इंसान बनाती है।"

With all New Directors

Welcome New Members

Rtn. Shekhar Dhamale

Rtn. Shekhar Dhamale, Businessman in Pune and running a company called Nanda Events with a experience of 25 years in event industry, Meena is Housewife. Daughter Neha has pursued graduation degree in BSc from MIT WPU College and pursuing MBA degree from Suryadautta College and parallely doing job in company called Hooterbux in Baner {Digital Marketing Company}. Son Suraaj Dhamale is currently pursuing graduation degree in BBA (International Business) from MIT WPU college.

Rtn. Anurag Fulay

Rtn. Anurag Fulay, is 30 years in Film Making and Advertising. Wife Aparajita, his batchmate, and now his partner in life and partner in crime too. Son Aseem, a qualified Pattesarie Chef from IHM, now planning higher education in Rome. Daughter Antaraa just through SSC with 90% is going to Normandy, France through RYE.

He at his company AFS makes films that caters to everybody's needs. His Specialities : CORPORATE, BRAND, PRODUCT AND MARKETING FILMS AND DOCUMENTARIES. He would like to take this opportunity to introduce himself as a Complete Brand Solutions Agency.

Rtn. Anuja Joshi

Rtn. Anuja Joshi, a Commerce Graduate, is working with Canara Bank since last 30 years. She takes interest in reading Marathi books and old Bollywood Songs. She loves Harmonium too. Her husband Ajit Joshi is MBA & Electronics Engineer, worked as MArketing Professional for 30 years with various companies in Mumbai & few years in Gulf-Middle East. Presently Retired. He also has interest in reading Marathi books and old Bollywood Songs.

We meet at Dnyanada Prashala, DP Road, Karvenagar, Every Friday at 7.30 pm.

Welcome New Members

Rtn. Dnyanesh Lohokare

Rtn. Dnyanesh Lohokareis Commerce graduate, but invoved in many Businesses. He is Battery Manufacturer, with brand name as INDO. His wife Smita is Science graduate and fully involved in this business. Dyanesh runs three construction companies, namely, Ishaana for Pune area, Vaishnav for PCMC area and Cimero for Government projects. He is Director in Frisson Multispeciality Hospital in Navi Mumbai, and partner in Frisson Medicals. His elder daughter Shreya is civil engineer, persuing for civil services examinations. His younger daughter Srushti is studying SY Commerce & has interest in singing. Youngest son Vihaan is studying in 3rd std. and plays Badminton.

Rtn. Seetaram Wadkar

Rtn. Seetaram Wadkar is in the trading business since 23 years. He owns a shop opposite Kotrud Bus Stand 'Amruta Seasonal Shoppee'. He deals in all types of Vegetables, Fruits, Dryfruits and specially in Mangos. His wife Meghana helped him in the business initially for 7-8 years. Now she is home-maker taking care of all in the joint family. His daughter Ruchira is working as an Interiaor Decorator. She is an animal lover, keeps two cats at home & helps all pets in

Rtn. Nilesh Zoting

Rtn. Nilesh Zoting, an Investment consultant having more than 17 years of experience in this field. He represents his own company named, "Capture Investment services" only for those who care for their hard-earned money. He has worked on Senior level with organisations like Tata Capital as Regional Manager-Wealth Management, ICICI Bank as Chief Manager- Investment advisory, DBS Bank as AVP & Unit Head. His wife Shilpa is Interior Decorator by profession, but now has developed interest in Tribal Painting. His son Archit is studying in 11th std. and is outstanding Origami artist.

Welcome New Members!

Inverter Donation at Prasanna Autism Centre

Foundation Director Rtn. Dinkar Palaskar and his हिरकणी team arranged handing over ceremony of Inverter Machine to Sadhana Godbole, Director, Prasanna Autisms Center at the hands of Vedangi Kulkarni, an upcoming TV actor.

The photos speak a lot. We don't have to say anything. On 1st July 2022, 140+ patients availed the facility of our Health Care Camp at Swapnashilp society. Bone Density, Haemogramme and Eye Checkup was done. Height, Weight, Blood Pressure, Oxygen Level etc. were part of the Health Care Programme.

MUMMY Medical Van donated by RCP Sahawas was active during Health Camp.

Many doctors were felicitated from Swapnashilp society and from Shashwat Hospital. Even eye specialists from Sanjivani Hospital were felicitated by our Club.

This day will always be remembered as a wonderful start of 22-23.

Medical Check-up Camp at Swapnashilp Society

1st July 2022

स्पर्श – शुभारंभ

Our Rotary-स्पर्श (शुभारंभ), Training-cum-Orientation Program, conducted on 10th July 2022, was well appreciated by all participants. 37 members attended the same with interest and enthusiasm. Our Trainer/Mentor/Coach Rtn. Prakash Avachat impressed upon the members the origin, idea, focus, organization of ROTARY in elucidating manner. Our Charter President Rtn. Shekhar Takalkar inaugurated the session by comparing Rotarian with वारकरी on the auspicious occasion of आषाढी एकादशी as both are identical in their भक्ती–शक्ती in their pursuit of life. President Rtn. Ajay Mutatkar called upon members to Enjoy & Imagine Rotary as there are limitless possibilities in Imagining Rotary.

There was good interaction between members and trainer enhancing the knowledge of Rotary and quality of deliberation. All new members introduced themselves in interesting manner - Dnyanesh, Shekhar, Vivek, Anuja, Ajit, Atul, Anjali, Nilesh. It was heartening to hear their stories, experience and talent they bring to RCP Sahawas.

1st July... National Chartered Accountants Day

President Rtn. Ajayaji Addressing National CA Day

July 1 is celebrated as National Chartered Accountant Day in India, as a tribute & celebration of the formation of the Institute of Chartered Accountants of India (ICAI) on July 1, 1949.

Today our Club – Rotary Sahawas celebrated the CA day at BMCC – Brihan Maharashtra College of Commerce. A lecture titled "Changing Dimensions of CA Profession and Restructuring of CA Course Curriculum" was arranged in association with BMCC. Well Known CA Dr S. B. Zaware graced the function as Key Note Speaker.

It was an honore for all to have CA Dr. Zaware as our guest today who incidentally was born in 1949 and had become CA in 1973. Since 1973, CA Dr. Zaware has tutored and nurtured more than 1,000 CAs and 10,000 CA aspirants. CA Dr. Zaware who himself was a follower of late Manibhai Desai and stated that CA is like an IAS officer who presents true & fair presentation of financial statements. He also highlighted that CAs must repose confidence of stakeholders and maintain quality conscience of financial services. While describing CA as a finance analyst who should develop capacity to understand and analyse financial transactions, CA Dr. Zaware also explained the importance of learning cycle of "Learn--Unlearn--Relearn" which can be used in any field.

Dr Zaware described a CA , is not a clerk but a Value adding analyst. He stressed on use of common sense, which is somewhat uncommon now a days. CA is just not an accountant but should be a Doctor of Financial Health, a Financial Engineer, a Lawyer, an Architect and most importantly a Business Solution Provider. CA Dr. Zaware proudly said that today 98% CAs are Business Solution Providers and 2 % are Accountants, from the condition exactly opposite in 1973 when he became CA.

CA Dr. Zaware, while reiterating the fact that "Change is the need of the hour", explained various new developments and changes in the CA exam stages, Foundation, Intermediate & Final. He also explained about changes in Marking, Passing System and Article ship. He also explained the UDIN System, developed by ICAI to felicitate its members for Verification & Certifications of

Rtn. CA Hemant Godbole felicitating CA Dr. Zaware

Documentation & Securing Transactional Documents.
Vice Chairman of ICAI Western Region, CA Yashwant Kasar also explained about the changed CA Curriculum and various Regulations. Vice principal of BMCC was also present on the occasion.
The JN Tata hall of BMCC was fully packed with CA aspirant students and BMCC teaching staff. Our own treasurer CA Rtn. Hemant Godbole compered the program nicely and was felicitated at the hands of CA Dr. Zaware.
President Rtn. Ajay Mutatkar presented work of Rotary and our Sahawas club's achievements and felicitated the guests.

President Rtn. Ajayji felicitating CA Yashawant Kasar

Secretary Rtn. Rahul Lale, First Lady Ann Aparna Mutatkar, PPs Rtn. Sudhir Vaidya & Rtn. Kiran Ingale, Rtn. Prakash Avachat, PN Rtn. Nivedita Mulay, Ann Sangita Pandit, Ann Swati Kothadia & Ann Pratibha Jagdale represented our club at the event.

The program led to a grand start to the New Rotary Year !

Rtn. Rahul Lale
Secretary
RCP Sahawas

The JN Tata hall of BMCC was fully packed with CA aspirant students and BMCC teaching staff

New Year Started with Blockbuster Activities

Hallo...**सहवासीय** !

1st July, as expected , was A Blockbuster Day for RCP Sahawas. A series of programs, projects impacting beneficiary, creating Image were organised.

1. Medical Cum Eye check up camp at Swapna-Shilp to commemorate Doctor's day in association with Shashwat Hospital, Sewa Arogya Foundation and RCP Kothrud was a huge success where around 150 people taking advantage of several medical testing options. We felicitated Dr. Karmarkar of Shashwat Hospital on this occasion at the hands of our Charter President Rtn. Shekhar Takalkar. Thanks IPP Rtn. Mahendra Chitte and his dedicated Medical project team.

2. Foundation Director Rtn. Dinkar Palaskar and his **हिरकणी** team arranged handing over ceremony of Inverter Machine to Prasanna Autisms Center at the hands of Vedangi Kulkarni, an upcoming TV actor. District Josh Team Director, Rtn. Madhav Tilgulkar and District Foundation Member, our own Rtn. C. L. Kulkarni were specially present. We felicitated the donor Mr. Rajesh Oswal and his old father Mr. Dasharath Oswal who assured further help if any, for any social cause. A visit to place like Prasanna Autism Center makes you realise you can't help them enough. They need something much more than monetary help. Can We ?

3. Our Treasurer CA Rtn. Hemant Godbole arranged career guidance for CA / Commerce Students to commemorate CA day in partnership with Brihan Maharashtra College of Commerce (BMCC). The key note speaker was an eminent Commerce Professor, Dr. CA S. B. Zavare who spoke on Challenges Before CA Profession and Changing Curriculum. A capacity crowd of students and teachers at Tata Hall, BMCC was a fulfilling experience. We felicitated our own CA Hemant Godbole at the hands of Dr. CA Zavare.

4. Our own District RYE Director, Rtn. Shobha Nahar and Rtn. Pallavi Ingale initiated very ambitious **हिंदी कार्यशाला** for all foreign inbound students over Zoom meeting. It's a unique concept in District and we are happy to be a part of any solution.

Yesterday, monsoon rains also started but our Team Sahawas was so engrossed in our tasks set for the day they never cared it was raining too. Thanks each and everyone **सहवासीय**,

तुम साथ हो जब अपने...दुनिया को दिखा देंगे

Rtn. Ajay Mutatkar
President, RCP Sahawas.

The 4-Way Test *of things we do and say :*

1. Is it the **TRUTH** ?
2. Is it **FAIR** to all concerned ?
3. Will it build **GOODWILL AND BETTER FRIENDSHIP** ?
4. Will it be **BENEFICIAL** to all concerned ?

खेलखेलमें....

Sport is no longer just hobby or recreation. It may be a way for career, livelihood, skill development, and ultimate excellence in sport itself. If proper guidance, awareness, modern facilities are created at any place, it can bring about transformation in the way you look at it.

Keeping this in mind, Rotary Club Of Pune Sahawas in partnesrship with District Rotary Team and Rotary Club of Indapur and in association with Simply Sport Foundation, Bangalore is launching a ambitious programm aimed at Community Development Through Sport initiative in Indapur. Myself, Aditi, Pallavi and Sudhir held a long meeting with all the stakeholders yesterday at Indapur to finalise the launch of the program. Rtn. N. Gandhi, President, RCI and Rtn. Vasant Rao Malunjakar were present in the meeting.

Final selection trial of the athletes will be held in Indapur on 9th August 2022, Wednesday.

Pre-selection trials, visit to different schools, events logistics etc were discussed in details and finalized. Rudra & Shashi from Simply Sport Foundation, Bangalore visited a day earlier in Indaur to inspect the facilities etc available there.

Rotary Club of Indapur will be hosting the event in the best possible manner. They are expecting a large number of hundreds of spectators comprising, athletes, parents, coaches, teachers, govt. officials and public leaders etc. They have strong team of Rotarians, volunteers etc. to manage it

All my सहवासीय members are requested to volunteer for this event on 9th.August 2022, Wednesday. Please convey your willingness to Sudhir and Pallavi as they will be planning the logistics of our Indapur tour for the cause.

थोडा प्रयास....थोडासा प्रवास....और साथ सहवास.....ENJOY ROTARY,

Rtn. Ajay Mutatkar
President, RCP Sahawas.

RCP Sahawas today participated in Tree Plantation program in 'Smritivan', Warje, organised by Tata Motors in partnership with TERRE Policy Center, working in the field of environmental preservation. Their President Dr. Vinita Apte was specially present on this occasion. Glad to inform she has been honoured with Vocational Excellence Award by Sahawas Club in 2016-17. Smritivan is 14 acres plot on the hills very well maintained by Tata Motors, TERRE foundation and Forest Department. Thanks our Rtn. Vivek Joshi and Rtn. Nivedita Muley for taking the lead in organising this project on Environment. Sudhir Vaidya, Prakash Avachat, Vivek Joshi, First Lady Aparna M along with Aparna Shah, Pallavi, Manjusha, Shradhha P, Swati, Sudarshana, Sangita, Nivedita, Shree Joshi, Manasi were present on this plantation program. Dist. Environment Director Rtn. Gauri Shikarpur also graced the occasion. A Yet Another Sahavasiy Initiative for Rotary causes.

Rtn. Ajay Mutatkar
President, RCP Sahawas

सामाजिक जाणीव असलेला स्वरयात्री

मनुष्य समाजप्रिय प्राणी आहे. समाजातच व्यक्तीचा विकास संभवतो. मनुष्य समाजावर प्रेम करतो. समाजासाठी धडपडू लागतो. समाज त्याच्यावर प्रेम करू लागतो. थोडक्यात सांगायचे झालं तर माणसाच्या व्यक्तिमत्त्व विकासात एक महत्त्वाचा भाग म्हणजे आजूबाजूचा समाज आणि सामाजिक दृष्टिकोन या समाजाला समृद्ध, सुबुद्ध आणि सुसंस्कृत बनवण्याचं काम हे समाजातल्या प्रत्येक घटकाचं असतं. महान माणसे आपापल्या क्षेत्राद्वारे हा प्रयत्न करतच असतात.

अशाच प्रकारचा प्रयत्न करणारे महामानव म्हणजेच आपल्या सर्वांचे लाडके संगीतकार, गायक, चित्रपट निर्माते सुधीर फडके. फडके यांचे 'राम' हे खरे नाव. रामाप्रमाणेच त्यांचे आयुष्य देखील खडतर. रामाप्रमाणेच आदर्श. म्हणूनच त्यांचे 'गीत रामायण' घराघरांत लोकांच्या मनामनांत पोहोचले. संकटातही धीराने पुढे जाणारा हा राम 'सुधीर' बनला. सुधीर नंतर बाबूजी. पाच दशकांहून अधिक काळ रसिकांना मंत्रमुग्ध करणाऱ्या बाबूजींची जीवनकथा संगीतमय, तेवढीच संघर्षमय. हालअपेष्टा, उपेक्षा आणि भ्रमंती तसेच देदीप्यमान यश, मान-सन्मान यांनी भरलेली. त्यांचे वडील नामांकित वकील होते. देशभक्त व समाजसेवक, त्यांना लोक 'कोल्हापूरचे टिळक' म्हणनू गौरवीत. घरातील वातावरण व सुयोग्य संस्कार यांच्यामुळेच सुधीर फडके महान बनू शकले.

वयाच्या सातव्या वर्षीच त्यांनी गायन शिकण्यास प्रारंभ केला. राग, ख्याल, तराणे, जलद चिजा, भरपूर ऐकायला मिळाल्या. रागविस्तार, आलाप, ताना, मींडकाम, हरकती, गमका सारे प्रकार घटवून घेणारे त्यांचे गुरू पाध्येबुवा. बाबूजी ग्वाल्हेर घराण्याचे उत्तम गायक बनले. समाजाला रिझवण्यासाठी, समाजाचे प्रबोधन करण्यासाठी आपला सुरेल गळा त्यांनी उपयोगात आणला. त्यांचा सूर केवळ त्यांच्यापुरता संकुचित राहिला नाही. त्यांनी समाजाचे अवलोकन केले. आपली माणसे पाश्चिमात्य संस्कृतीकडे आकर्षित होत असताना आपला ठसा संगीतक्षेत्रात उमटवून त्यांना पुनश्च एकदा आपल्या संस्कृतीकडे वळवून घेण्याचा बाबूजींचा प्रयत्न यशस्वी बनू लागला.

बाबूजी स्वातंत्र्यसैनिक होते. तेव्हा त्यांनी अगदी जवळून समाजाचे दर्शन घेतले. जत्रेच्या मेळ्यांमधून, आरएसएसमधून त्यांनी आपले समाजाशी असलेले नाते घट्ट केले. आरएसएसमधील अनेक गीतांना सोप्या चाली लावून समाजाला स्फूर्ती दिली. देशभक्तीची प्रेरणा दिली. त्यांच्या चाली थेट हृदयाला भिडणाऱ्या होत्या. प्रचंड जनसमुदाय त्यांच्या सुरात सूर मिसळत असे.

'वेद मंत्राहून आम्हां, वंद्य वंदे मातरम्' बाबूजींनी स्वरबद्ध केलेल्या या गीताने तत्कालीन आबालवृद्धांमध्ये सळसळते चैतन्य निर्माण केले होते. मालकंस रागातील सोपी चाल असल्याने ते सामुदायिक गीत बनले. बाबूजींच्या स्वरातील 'ने मजसि ने, परत मातृभूमीला' हे गीत ऐकणे म्हणजे गानरसिकांना लाभलेला दुर्मिळ योगच. बाबूजींनी स्वरबद्ध केलेले हे सावरकर गीत म्हणजे सावरकर खरोखरच एकाकी बसून सागराशी संवाद साधत आहेत असेच वाटते.

बाबूजींच्या गीतात, स्वरात समाजाला एका दिशेने घेऊन जायची ताकद होती. मग ती देशभक्तीकडे नेणारी असो, भक्तिरसाकडे नेणारी असो वा मधुर भावगीतांकडे जाणारी असो. रसिक आपोआपच त्या दिशेला ओढले जात असत. त्यांच्या संगीताचे एक वैशिष्ट्य म्हणजे चालीचा सोपा, सुंदर भावाविष्कार. गीतातील शब्द, अर्थ यन प्रमुख गोष्टींना ते योग्य न्याय देत.

'बलसागर भारत होवो' हे सानेगुरुजींचे गीत सहज सोपे होते म्हणूनच अजरामर झाले. बाबूजींच्या अफाट कारकीर्दीचा आढावा घेतला तर कोणती गोष्ट लक्षात येते, तर त्यांच्या गीतांतून सामाजिक भान प्रकट झालेले दिसते. श्रमिक, कष्टकरी अशा लोकांचे चित्रण असणारी गीते उपेक्षितांचे अंतरंग उलगडून दाखवत नि अशा उपेक्षित समाजबांधवांना जगण्याची हिंमत, स्फूर्ती, प्रेरणा देत.

'

नसे राऊळी वा नसे मंदिरी । जिथे राबती हात तेथे हरी ॥', 'मानवतेचे मंदिर माझे । आत लाविल्या ज्ञानज्योती । श्रमिक हो, घ्या इथे विश्रांती ॥' 'ज्ञानदिव्याने ज्ञान वाढते । त्या ज्ञानाचे मंदिर हो । सत्यशिवाचे मंदिर हो ॥' या नि अशा कितीतरी गाण्यांचा उल्लेख करता येईल. म्हणूनच बाबूजींच्या सांगीतिक कारकीर्दीचे मूल्यमापन करायचे झाले तर म्हणता येईल की बाबूजी म्हणजे 'स्वरगंगेच्या पावनतीर्थाचा योगीच!'

माणसाला अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा इत्यादि सिद्धी प्राप्त असतात. पण देवकृपेने मराठी माणसाला नववी सिद्धी प्राप्त झाली होती. ती म्हणजे 'गदिमा'. गदिमा म्हणजे आधुनिक वाल्मीकी. त्यांनी रामायण रचले नि ते घरोघरी पोहोचवले बाबूजींनी. अतिशय सुरेल आवाज, उत्कृष्ट चाली, अचूक शब्दफेक त्यातून प्रकट होणारा भाव नि अर्थ रसिकमनात घर करून राहिल यात नवल ते काय? पुढे आकाशवाणीच्या माध्यमातून गीतरामायण घराघरांत पोहोचलंय. त्यामुळेच अवघा समाज भक्तिरसात न्हाऊन निघाला. प्रत्येक आठवड्यातून एक दिवस रसाळ निवेदनानंतर एक गीत रामाच्या दैवी अवताराप्रमाणेच प्रत्येकाच्या घरात, मनात अवतीर्ण होत होते.

स्वातंत्र्यवीर सावरकर

स्वातंत्र्यवीर सावरकर हे बाबूजींचे आराध्य दैवत. दोघेही कडवे हिंदुत्ववादी. सावरकरांचे संघर्ष, त्याग, राष्ट्रभक्ती यांनी भरलेले चरित्र लोकांपुढे यावे. त्यांच्या देशभक्तीचा आदर्श तरुण पिढीपुढे यावा या तळमळीने सावरकरांवर उत्तम चित्रपट तयार करायचाच हा निश्चय कृतीत आणण्यासाठी बाबूजींनी प्रयत्नांची पराकाष्ठा केली. त्यांची सामाजिक जाणीव त्यांना स्वस्थ बसू देत नव्हती. सात–आठ वर्षे ते चित्रपटासाठी निधी जमा करत होते. जनतेच्या पैशाबाबत ते अतिशय संवेदनशील होते. अनेक वेळा लोक चित्रपट पूर्ण होत नाही म्हणून टीका करत. ती त्यांच्या जिव्हारी लागत असे. कमीत कमी खर्चात चित्रपट तयार करायचा नि जास्तीत जास्त लोकांपर्यंत पोहोचवायचाच अशी त्यांची विशिष्ट निष्ठा होती. त्याचमुळे त्यांनी चंग बांधला की, 'उत्कृष्ट चित्रपट केल्याशिवाय राहणार नाही नि तोपर्यंत मरणारही नाही.' ज्यादिवशी चित्रपट पूर्ण झाला तो दिवस त्यांच्या कृतार्थतेचा होता. सामाजिक बांधीलकी सिद्ध केल्याचा आनंद त्यांच्या नसानसांतून ओसंडत होता.

'मेरा घर, भारत देश' या प्रकल्पांतर्गत पूर्वांचलातले काही विद्यार्थी मुंबईत आणून त्यांना मुंबईतल्या सहविचारी कुटुंबांमध्ये शिक्षणासाठी ठेवण्याची कल्पना विद्यार्थी परिषदेने मांडली. ती कल्पना बाबूजीनी कृतीत आणली. लेकी फुन्शो ऊर्फ दीपक दीर्घकाळ त्यांच्या घरी राहिला आणि फडके बनून गेला. या उदाहरणातून त्यांची सामाजिक जाणीव दिसून येते.

त्यांचा एकुलता एक मुलगा श्रीधर याला राष्ट्रीय संरक्षण प्रबोधिनीत जाण्यास आनंदाने संमती देणारा हा पिता विरळाच. आपला संगीत वारसाच पुढे चालव असा आग्रह त्यांनी कधीही धरला नाही. यातून एक राष्ट्रभक्त पिताच बाबूजींच्या रूपाने समाजापुढे आदर्शरूपात साकारतो.

चीनने भारतावर आक्रमण केले नि भारताशी शत्रूत्व पत्करले. याची बाबूजींना अतिशय चीड होती. एकदा ते हॉटेलात बसले होते. वेटरने चायनीज डिशेसचा उच्चार करताच ते अतिशय खवळले, नि चिडून उद्गारले, "चीन हमारा दुश्मन है।" चायनीज पदार्थांचे सेवन तर राहिलेच, पण त्याचा उल्लेखही त्यांना सहन झाला नाही. त्यांनी हॉटेल मालकाला चांगलेच ठणकावले.

बाबूजी माणूस म्हणून फार महान होते. त्यांचे सर्वांशी प्रेमाचे वागणे असायचे. मग ते कलाकार असोत, सहकारी असो अथवा नोकर असोत. सर्वांशीच ते अदबीनं वागत. अडीअडचणीच्या वेळी नोकरांना चटकन मदत करत. त्यांच्याशी चांगले वागणाऱ्या लोकांबद्दल ते लगेचच कृतज्ञता व्यक्त करत. कृतज्ञता हा त्यांचा स्थायीभाव होता.

परिवार

बाबूजींनी २९ मे १९४९रोजी त्याकाळच्या प्रसिद्ध पार्श्वगायिका ललिता देऊळकर यांच्याशी विवाह केला. त्याचे एकुलते एक चिरंजीव श्रीधर फडके एक उत्तम गायक आणि संगीतकार आहेत. श्रीधरच्या पत्नी चित्रा ह्या कौटुंबिक न्यायालयात वकील आहेत आणि ह्या दाम्पत्यास दोन कन्या आहेत.

शैक्षणिक पार्श्वभूमी

घरच्या खालावलेल्या परिस्तिथीमुले, खूप इच्छा असूनही, बाबूजींना हवं तसं शिक्षण घेता आलं नाही. ते जेमतेम आपलं शालेय शिक्षण पूर्ण करू शकले. प्रत्याक्षात त्यांनी मोठेपणी इंजिनियर होण्याचं स्वप्न बघितलं होतं, पण परिस्थितीमुळे त्यांना ते शक्य झाले नाही. मग त्यांनी पुढे आपल्या मुलाला इंजिनियर करून आपली उच्च शिक्षणाची इच्छा अंशतः पुरी करून घेतली.

संगीत शिक्षण

बाबूजींना लहानपणापासून शास्त्रीय संगीताची आवड होती, त्यामुळे त्यांनी त्याकाळचे कोल्हापूरचे अतिशय प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत गायक गायनाचार्य पं. वामनराव पाध्ये यांच्याकडून काही वर्षे शास्त्रीय संगीत गायनाचं विधिवत प्रशिक्षण घेतलं. पाध्येबुवांची शिकवण्याची हातोटी इतकी विलक्षण होती की अल्पावधीतच बाबूजींनी शास्त्रीय संगीतात चांगले प्रावीण्य मिळवलं. त्यांच्या संगीताचा मूळ पाया भक्कम झाला. त्यानंतर बाबूजींनी बाबुराव गोखल्यांनी सुरू केलेल्या 'महाराष्ट्र संगीत विद्यालयात' काही काळ शिक्षण घेतलं. पण त्याचा त्यांना तितकासा फायदा झाला नाही. मग

बाबूजींनी कुणाहीकडे संगीताचं शिक्षण न घेता एकलव्यासारखं शिष्यत्व आरंभलं. स्वतःच इतर गायकांची गाणी ऐकून आपली गायकी फुलवत नेली. बालगंधर्व, हिराबाई बडोदेकर आणि के. एल. सैगल त्यांचे विशेष आवडते गायक. त्यांच्या रेकॉर्ड्स ऐकून त्यांनी त्यांच्या गायकीचा सखोल अभ्यास केला. त्या तिघांनाही बाबूजी गुरुस्थानी मानत.

स्वतःतील कलागुणांची पहिली जाण

बाबूजी गायनाचार्य पं. वामनराव पाध्ये यांचे लाडके विद्यार्थी होते. बाबूजींच्या संगीतक्षेत्रात होत असलेल्या प्रगतीवर ते अतिशय खुश होते. एकदा कोल्हापुरात 'गांधर्व महाविद्यालयात' एक आखिल भारतीय परिषद भरली होती. त्या परिषदेत हिंदुस्तानभरचे काही नामवंत गवई आले होते. त्या सर्वांच्या समोर पाध्येबुवांनी बाबूजींना उभं करून सांगितलं की, "हा माझा लहान शिष्य उत्तम नोटेशन करतो. जमलेल्या गवयांपैकी कोणीही काहीही गावं. दुसऱ्या क्षणी हा त्यांचा नोटेशन गाऊन दाखविलं." तेथे उपस्थित असलेल्या काही नामवंत गवयांनी निरनिराळ्या रागांतील आलाप, ताना घेतल्या व बाबूजींनी तात्काळ त्यांचं सहीसही नोटेशन गाऊन दाखवलं. पाध्येबुवांना वाटत असलेला बाबुजींविषयीचा सार्थ विश्वास त्यांनी सिद्ध करून दाखवला.

अशीच एक दुसरी घटना 'महाराष्ट्र संगीत विद्यालयात' शिकत असताना घडली. त्याकाळी कपिलेश्वरीबुवांच्या 'सरस्वती संगीत विद्यालयात' शास्त्रीय संगीताची स्पर्धा होत असे. बाबूराव गोखल्यांनी 'महाराष्ट्र संगीत विद्यालया' तर्फे बाबूजींना या स्पर्धेत भाग घेण्यासाठी पाठवलं होतं. त्या स्पर्धेसाठी परीक्षक होते प्रसिद्ध गायक अब्दुल करीम खाँसाहेब. त्यावेळी वयाच्या अवघ्या बाराव्या वर्षी बाबूजींनी सादर केलेल्या मुलतानी रागातील एका चीजेने सभा जिंकली. बाबूजींच्या गायनशैलीने अब्दुक करीम खाँसाहेब इतके प्रभावित झाले की, भाग घेणाऱ्या विध्यार्थानं फक्त एकच गाणं सादर करायचं हा ठरलेला नियम डावलून त्यांनी स्वतः बाबूजींना दुसरं गाणं सादर करण्याची फर्माईश केली. या दोन घटनांनी बाबूजींचा आत्मविश्वास तर वाढलाच पण त्यांच्या जीवनाची दिशाही निश्चित झाली. नंतर गायन आणि संगीत हेच त्यांचं जीवनध्येय ठरलं.

संगीतकार म्हणून पहिली संधी

बाबूजी कोल्हापूरला असताना त्यांचे एक मित्र माधव पातकर, जे स्वतः एक चांगले गायक आणि कवी होते, भेटायला आले. त्यांनी येताना 'दर्यावरी नाच करी, होडी चाले कशी भिरीभिरी' हे ग. दि. माडगूळकरांचं गीत आणलं होतं. ते गीत पातकर स्वतः गाऊ इच्छित होते. त्यांनी त्या गीताला चाल लावून देण्याची बाबूजींना विनंती केली. बाबूजींनी लावलेली चाल सुरेख होती पण ती आपल्याला गाता येणार नाही हे पातकारांच्या लक्षात आलं. पण त्यांना ती चाल एवढी आवडली होती की त्यांनी बाबूजींना ती चाल ग. दि. माडगूळकर आणि एचएमव्ही कंपनीचे वसंत कामेरकरांना ऐकविण्याची गळ घातली. बाबूजींनी जेव्हा त्यांना ती ऐकवली तेव्हा कामेरकर अतिशय खूष झाले आणि त्यांनी ते गाणे बाबूजींनीच एचएमव्हीसाठी गावं असा आग्रह धरला. अशा रितीनं बाबूजींना गायक आणि संगीतकार अशी दुहेरी संधी एकदमच चालून आली. येथूनच त्यांचा आणि ग. दि. माडगूळकरांचा एकत्रित प्रवास सुरु झाला.

चित्रपट निर्माते बाबूजीबाबूजींनी, य. गो. जोशींच्या बरोबरीने भागीदारीत वंशाचा दिवा (१९४८) व विठ्ठल रखुमाई (१९५१) या दोन मराठी आणि रत्नघर (१९५५) या एका हिंदी चित्रपटाची निर्मिती केली. त्यानंतर बऱ्याच वर्षांनी १९६१ साली त्यांनी 'हा माझा मार्ग एकला' या मराठी चित्रपटाची निर्मिती केली. या चित्रपटास उत्कृष्ट मराठी चित्रपटाचं "राष्ट्रपती रौप्य पदक" देऊन गौरविण्यात आलं होतं. नंतर बाबूजींनी 'सावरकर दर्शन प्रतिष्ठान' ची स्थापना करून वीर सावरकर (२००२) या चिवत्रपटाची निर्मिती केली. बाबूजींचा हा शेवटचा चित्रपटही समीक्षकांनी वाखाणला.

बाबूजींच्या व्यक्तिमत्वाचे इतर पैलू

बाबूजी प्रखर राष्ट्रभक्त आणि राष्ट्रीय सेवा संघाचे कट्टर अनुयायी होते. त्यांनी दादरा–नगर हवेली आणि सिव्व्वासाच्या मुक्तिसंग्रामात मोठी कामगिरी बजावली होती. त्याचप्रमाणे गोवा मुक्तिसंग्रामातही त्यांनी हिरिरीने भाग घेतला होता. पोर्तुगीजांविरुद्ध लहान वयात लढा देऊन तुरुंगवास भोगणाऱ्या मोहन रानडे आणि तेलू मस्करेन्हास यांच्या सुटकेसाठी बाबूजींनी अथक परिश्रम केले.

बाबूजींचे समाजकार्य

संगीतकार आणि गायक म्हणून अतिशय व्यस्त असूनही बाबूजींनी बरंच समाजकार्य केलं होतं. देशावर जेव्हा जेव्हा भूकंप, वादळं, पूर अशा नैसर्गिक आपत्ती आल्या तेव्हा तेव्हा बाबूजींनी अनेक चॅरिटी शोज करून मोठा निधी सरकारला पुनर्वसन कार्यासाठी उपलब्ध करून दिला. काही काळ ते ग्राहक चळवळीच्या मुंबई शाखेचे अध्यक्षही होते.

पुरस्कार आणि मानसन्मान

बाबूजींना अनेक मानसन्मान आणि पुरस्कार त्यांच्या जीवनकाळात मिळाले. त्यातील काही महत्त्वाच्या मानसन्मानांची व पुरस्कारांची माहिती पुढीलप्रमाणे:

१९६३पासून दरवर्षी आयोजित केल्या जाणाऱ्या महाराष्ट्र राज्य मराठी चित्रपट महोत्सवात बाबूजींना सहा वेळा प्रपंच, संथ वाहते कृष्णामाई, आम्हीं जातो आमुच्या गावा, धाकटी बहिण, कार्तिकी आणि या सुखांनो या, या चित्रपटातील त्यांनी गायलेल्या गीतांसाठी सर्वोत्कृष्ट पार्श्वगायक म्हणून गौरविण्यात आलं.

१९६३पासून दरवर्षी आयोजित केल्या जाणाऱ्या महाराष्ट्र राज्य मराठी चित्रपट महोत्सवात बाबूजींना प्रपंच आणि आम्हीं जातो अमुच्या गावा या चित्रपटाकरिता त्यांनी दिलेल्या उत्कृष्ट संगीतासाठी सर्वोत्कृष्ट संगीतकार म्हणून दोन वेळा गौरविण्यात आलं.

सुरसिंगार संसदतर्फे बाबूजींना त्यांनी दिलेल्या उत्कृष्ट संगीतासाठी प्रथम १९६८साली भाभी की चुडियाँसाठी आणि १९७०साली मुंबईचा जावई साठी सर्वोत्कृष्ट संगीतकाराला दिल्या जाणाऱ्या स्वामी हरिदास पुरस्काराने दोन वेळा गौरविण्यात आलं.

१९९६मध्ये मुंबईच्या उषःप्रभा प्रतिष्ठान तर्फे भारतीय चित्रपटासाठी दिलेल्या अनमोल योगदानाबद्दल 'कै. व्ही. शांताराम' यांच्या स्मरणार्थ देण्यात येणारं पारितोषिक देऊन गौरविण्यात आलं. त्याच वर्षी कुसुमाग्रज प्रतिष्ठानतर्फे संगीतक्षेत्रातील कामगिरीबद्दल 'गोदावरी पुरस्कार' देऊन गौरविण्यात आलं.

चतुरंग प्रतिष्ठानतर्फे सन्मानाचा समजला जाणारा 'जीवनगौरव' पुरस्कार देऊन बाबूजींचा गौरव करण्यात आला.

१९९८साली मा. दीनानाथांच्या ५६व्या पुण्यतिथी निमित्त प्रदीर्घ संगीत सेवेबद्दल आशा भोसले यांच्या हस्ते स्मृतिचिन्ह देऊन बाबूजींचा गौरव करण्यात आला.

२००१साली बाबूजींना महाराष्ट्र शासनातर्फे प्रतिष्ठेचा समजला जाणारा 'लता मंगेशकर' पुरस्कार देऊन गौरवण्यात आलं.

२९ जुलै २००२रोजी एक समर्पित स्वरतीर्थ नादब्रह्मात विलीन झाले. हिंदुत्व, संघ आणि सावरकर या त्रिवेणी संगमावर या साधकाने ८३ वर्षे तपस्वी जीवनाची साधना केली. बाबूजींच्या निधनानंतर २००३ साली महाराष्ट्र शासनाने बोरीवली आणि दहिसर या भागांना जोडण्याऱ्या उड्डाणपुलाचं 'सुधीर फडके उड्डाणपूल' असं नामकरण करून या महान संगीतकाराला मानवंदना दिली. दादरा नगरहवेली, सशस्त्र मुक्तिसंग्रामातील नेतृत्व, ग्राहक पंचायतीच्या चळवळीत झोकून स्वीकारलेले अध्यक्षपद, सावरकर चित्रपटाचा ध्यास अशा देदीप्यमान घटना घडविणाऱ्या या कर्मयोग्याला शतशः प्रणाम!

स्रोत: माहितीचे आंतरजाल

बाबूजी... सूर आले दुरुनी, मन जाई भरुनी

बाबूजी .. म्हणजे सुधीर फडके .. मराठी संगीतातील एक अविभाज्य नाव .. जगभरातील मराठी रसिकांच्या मनातला - भावविश्वातला एक हळवा कोपरा आपल्या स्वर्गीय आवाजाने भारावून टाकणारे आणि स्वरतालबध्द तसंच कायम गुणगुणत रहावं असं वाटणाऱ्या चाली बांधणारे - गेल्या अनेक पिढ्यातील रसिकांच्या गळ्यातील ताईत व अनेक उदयोन्मुख गायक-गायिकांचे प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष गुरू असलेले गायक व संगीतकार म्हणजे आपले बाबूजी - सुधीर फडके!

अनेक अजरामर, अविनाशी, अवीट गोड चालींची गीते देणाऱ्या बाबूजींचा जन्म २५ जुलै १९१९रोजी कोल्हापूरला झाला. त्यांचं मूळ नाव राम फडके. संगीतकार व गायक म्हणून एचएमव्हीमध्ये आणि चित्रपटांत काम करायला लागल्यावर त्यांना सुधीर फडके म्हणून जग ओळखायला लागले. २०१९साली त्यांनी वयाची शंभर वर्ष पूर्ण केली असती, पण २९ जुलै २००२रोजी वयाच्या ८३व्या वर्षी जगाचा निरोप घेणाऱ्या बाबूजींची गाणी आणि त्यातलं वैविध्य आज एवढ्या वर्षांनंतरही तेवढंच मोहवून टाकतं आणि आणखी शेकडो वर्षे मोहवत राहील. त्यांनी संगीतबद्ध केलेली, गायलेली गाणी लहानपणापासून ऐकत आलोय. सुरुवातीला ती गाणी, त्यातल्या अवीट गोडीच्या सुरांमुळे, सहजसुंदर चालींमुळे भावली. थोडंसं कळायला लागल्यावर त्याच गाण्यांमधली ती अवीट गोडी तिच्या मर्मासकट, बाबूजींच्या संगीतातील अफाट-अजोड सामर्थ्यासकट आणि सहजतेसकट समोर येत राहिली आणि अजूनही येत राहतात. त्यांचं प्रत्येक गाणं हा स्वतंत्र अभ्यासाचा विषय आहे; हे पुरेपूर पटलं. गाण्याची एकेक ओळ सुरांच्या माळेत ओवताना, स्वर-रागांबरोबर आपणही त्यांच्याच रंगात रंगून जातो आणि बाबूजींच्या अचाट तयारीला व ताकदीला पाहून भारावून जातो.

पण ही ताकद, ही तयारी सहज आलेली नाही - त्यात बाबूजींची खडतर तपश्चर्या होती, अभ्यास होता. ''जगाच्या पाठीवर'' हे त्यांचं आत्मचरित्र वाचल्यावर कळतं की घरच्या बेताच्या - काहीशा हलाखीच्या परिस्थितीतून अनेकदा चणे-फुटाणे खाऊन, अनेकदा अपमान मनातल्या मनात पचवून, प्रसंगी निर्वासितांसारखे राहून, प्रचंड कष्ट करून एखादा ध्येयवेडा माणूस आपलं लक्ष्य कसं साध्य करू शकतो. आणि या सर्वातून जाऊनही गाताना - बोलताना, सतत त्यांच्या चेहऱ्यावर एक स्मितहास्य असे, प्रेमळ भाव दिसे आणि नकळत त्यांच्याबद्दल आपुलकी वाटायला लागली. त्यांच्या गाण्यातील स्पष्ट शब्दोच्चार हा अट्टाहास न वाटता गीतातील भाव, त्यातला अर्थ स्पष्टपणे रसिकांपर्यंत पोचावा - त्यातली आर्तता मनाला भिडावी यासाठी होता हे आपण जाणलं पाहिजे. हे सहज आत्मसात करता येत नाही. त्यासाठी वर म्हणल्याप्रमाणे तपश्चर्या तर आहेच, शिवाय एक कडक शिस्तही. आणि याच आपुलकी, प्रेमभाव आणि शिस्तीमुळे सुधीर फडके हे घराघरातल्या प्रत्येकाचेच बाबूजी झाले असे वाटते.

त्यांचं प्रत्येक गाणं हे आपल्याला समाधी अवस्थेत नेतं - मग ते ''समाधी साधन संजीवन नाम'' (https://youtu.be/BGzw9LRUclM) असो वा ''गुरु एक जगी त्राता'' (https://youtu.be/8cLOJBT_pSo). . ''देहाची तिजोरी'' (https://youtu.be/ALrZxOPx3DA), असो वा ''देव देव्हाऱ्यात नाही'' (https://youtu.be/1EmVD_1ofyc), ''विठ्ठला तू वेडा कुंभार'' (https://youtu.be/EeNd0JJbM-U) असो वा ''संथ वाहते कृष्णामाई'' (https://youtu.be/D-3kMbeNu6k), - - त्यांचं प्रत्येक भक्तीगीत ऐकताना आपण पवित्र भक्तिरसात न्हाऊन निघतो. त्यांनी स्वतः संगीतबद्ध केलेलं गीत असो वा दत्ता डावजेकर, यशवंत देव अशा संगीतकारांकडे ते गात असोत, तेवढ्याच तन्मयतेने ते गाताना दिसतात.

त्यांच्या चित्रपट गीतातही वास्तवता दिसायची. ''हवास मज तू हवास तू'' हे उडत्या चालीचं गीत असलं तरी ते मनाला भिडतं. ''रूपास भाळलो मी'', ''चंद्र आहे साक्षीला'', ''धुंदी कळ्यांना'' अशा गीतातून आपल्याला प्रेमाची वेगळीच हळुवार भावना जाणवते. चित्र समोर नसतानाही ''त्या तिथं पलीकडे'' गाणं ऐकताना आपल्याला ''प्रियेची झोपडी'' दिसायला लागते.

''जेथे राघव तेथे सीता'', ''मज सांग लक्ष्मणा जाऊ कुठे?'' सारखी विरह गीतं असोत किंवा ''मानवतेचे मंदिर माझे'', ''यशवंत हो जयवंत हो'' किंवा ''बलसागर भारत होवा'' अशी स्फूर्तीगीतं असोत किंवा ''कुणीतरी बोलवा दाजिबाला'', ''जाळीमंदी पिकली करवंद'' किंवा ''जाऊ द्या सोडा'' सारख्या

लावण्या असोत, त्यांनी किती कमाल बनवल्या आहेत. ''तोच चंद्रमा नभात'' सारख्या गाण्यात कुठं कसं थांबायचं, शब्दांत एक भाव-एक आस कशी उतरवायची याचा एक अत्युच्च अनुभव बाबूजी देतात.

त्यांच्या गीतरामायणाबद्दल काय बोलायचं? ''स्वये श्री रामप्रभू ऐकती'', ''दशरथा घे हे पायसदान'', ''मार ही त्राटिका'' आणि सर्वच गाणी ऐकून सगळं रामायणच डोळ्यासमोर उभं राहतं. ''पराधीन आहे जगती'' ऐकून क्वचितच एखादा असेल की ज्याच्या डोळ्यांत अश्रू येत नसतील.

''ज्योती कलश झलके'', ''आज पहिली तारीख है'', ''ओ माँ, तेरी सुरतसे अलग'' अशी अनेक हिंदी गीतं आपण ऐकतो. आशा भोसले-लताजी-माणिक वर्मा-पं. जितेंद्र अभिषेकी-पं. वसंतराव देशपांडे-सुरेश वाडकर-जयवंत कुलकर्णी-रवींद्र साठेंपासून अगदी रफी-किशोरकुमार पर्यंत सर्वांबरोबर त्यांनी गाणी केली. मुकेश, मन्ना डे, सुमन कल्याणपूर, जयवंत कुलकर्णी, अनुराधा पौडवाल, श्यामराव कांबळे, प्रभाकर जोग, सेबॅस्टिअन आणि तबलजी केशवराव बडगे, चंद्रकांत नाईक, अण्णा जोशी, ढोलकीवादक गंगावणे अशा अनेकांबरोबर त्यांनी काम केलंय, आपली पत्नी ललिता आणि पुत्र श्रीधर फडके यांच्याबरोबरही.

बाबूजींची गाणी ही सर्व वयोगटातल्या रसिकांना भावणारी आहेत. काही संगीतकार किंवा गायक हे तरुणांमध्ये लोकप्रिय असतात तर काही वरिष्ठ वयोगटात आणि ते त्या त्या वयोगटातच लोकप्रिय राहतात. परंतु बाबूजींची लोकप्रियता ही सर्व वयोगटात आहे, म्हणूनच ती कालातीत आहेत.

संगीत आणि गायनाबरोबरच राष्ट्रहित व सामाजिक विषयांचंही त्यांना भान होतं. गोव्याचे स्वातंत्र्यवीर मोहन रानडे यांच्या सुटकेसाठी त्यांनी खूप प्रयत्न केले. ते राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघाचे स्वयंसेवक होते आणि सावरकरांचे निस्सीम भक्त होते. दादरा-नगर हवेलीच्या मुक्तीसंग्रामात त्यांनी भाग घेतला होता. अनेक सामाजिक कार्यांसाठी निधी उभा करण्याकरिता त्यांनी गीतरामायणाचे अनेक कार्यक्रम केले. ग्राहक पंचायतीचे ते पहिले अध्यक्ष होते. स्वातंत्र्यवीर सावरकरांवर चित्रपट काढण्याचं स्वप्न त्यांनी पाहिलं आणि ते त्यांनी पूर्णही केलं!!

बाबूजींची गीतं अंतरंगातून, मनाच्या तळापासून येतात त्यामुळेच ती मनाला भिडतात. त्यातली उत्कटता, त्यातले सूर सहजपणे मनाला भिडतात आणि म्हणूनच जेव्हा ''सूर लागू दे'' हे बाबूजींचे स्वर कानांवर पडले की तिन्ही लोकांत मनं आनंदाने भरून जातात - भरून जात राहतील!!!

बाबूजींची गाणी कितीही वेळा ऐकली तरीही मन भरत नाही - याचमुळेच

१. त्यांची काही खास गाणी -https://youtu.be/3KOwiWDLZos
२. दूरदर्शनच्या संग्रहातील बाबूजींच्या व्यक्तिमत्वावर आधारित लघुपट.. https://youtu.be/6BEr4XQr3tY
३. रोटरी सहवास मध्ये ॲन मधुरा गोडबोले यांच्याबरोबर गायलेलं गाणं, चंद्र आहे साक्षीला खास तुमच्यासाठी https://youtu.be/AW2FAzo7wQg

राहुल लाळे

वाचू आनंदे

Rotary Club of Pune Sahawas is grateful to Samrajya Co-op Housing Society, Kothrud and Mr. Purushottam Deshpande for their gracious gift of loads of Library books and Rs. 10,000 for purchase of Sports goods for Dnyanda Prashala, Kirkatwadi. Mrs. Maya Deshpande (wife of Mr. Purushottam Deshpande, who is celebrating his 75th Birthday today) and Mrs. Shailja from Samrajya Society were specially present on this occasion. It was wonderful goodwill gesture from Deshpande family and Samrajya Society and thanks to our Rtn. Prakash Avachat for his coordination in arranging this impactful event enhancing the image of RCPS. As is well-known, our Rtn. Prakash Avachat is already conducting computer literacy programm, handwriting improvements classes and Mathematics skills enhancement exercises in this school. It was duly acknowledged by the Principal Mr. Limbraj Khune in his speech. Our *हिरकणी ग्रुप* also felicitated Rtn. Manisha Bhosale on her birthday, at Ajinkya Dedge School, Nanded Phata. Yet another Sahawas Initiative by Foundation team.

Our Charter President Mr. Shekhar Takalkar, Rtn. Prakash Avachat, Rtn. Pratibha Jagdale, First lady Aparna and Ann. Pooja Kulkarni attended the function

Finally it's all about *सहभाग, सहयोग और सहवास*

Rtn. Ajay Mutatkar
President, RCP Sahawas

Shrirang

Prakash

तुम जियो
हजारो साल !
सालके दिन हो
पचास हजार !!

Manisha

Mugdha

Yoga for Harmony & Peace

आंतरराष्ट्रीय योग दिन

२१ जून २०१५ रोजी मोदीजींनी 'आंतरराष्ट्रीय योग दिन' जाहीर केल्यापासून आपण सगळ्यांनीच दरवर्षी कुठे ना कुठे अशा कार्यक्रमाला हजेरी लावली असेल. निदान घरी तरी काही तरी योगासनं करून बघीतली असतील याची मला खात्री आहे.

यंदा कर्वेनगर येथील 'वेदांत सांस्कृतिक मंचा'ने हा कार्यक्रम 'श्री संकल्प सामाजिक प्रतिष्ठन'च्या सहकार्याने राजाराम पुलाजवळील 'महालक्ष्मी लॉन्स' येथे २१ जून २०२२ रोजी आयोजित केला होता. कार्यक्रमासाठी कर्वेनगर परिसरातील सुमारे २०० नागरिक, आठवड्याचा दिवस असूनही उपस्थित होते.

मनालीताई देव यांच्या शालेय विद्यार्थिनींची कलात्मक योगासने, अलकाताई जाधव आणि विनायक मुसळे सर यांनी केलेली विविध आसनांची प्रत्यक्षिके, मुसळे सरांनी उपस्थितांकडून करून घेतलेली आयुष मंत्रालयानी सुचवलेली आसने, योगाचार्य केदार पारगावकरांनी विषद केलेले वैद्यकीय योगाचे महत्त्व आणि मनोज साळी सरांनी सांगितलेले शास्त्रीय सूर्यनमस्काराची माहिती असे भरगच्च कार्यक्रम सादर केले गेले.

या कार्यक्रमाचे सूत्र संचालन आपल्या क्लबच्या ॲन जयश्रीताई धुपकर यांनी केले होते, तसेच या कार्यक्रमाच्या आयोजनातही त्यांचे महत्त्वाचे योगदान होते.

आपल्या क्लबच्या ॲन जयश्री ताई धुपकर यांनी १९९९मध्ये 'योगसाधना' या संस्थेतून 'योगपारंगत' हा पदविका अभ्यासक्रम पूर्ण करून योगवर्ग घेण्यास सुरुवात केली. १९९९-२०१३पर्यंत मार्केटयार्ड परिसरातील महिलांसाठी वर्ग चालवले. त्यामध्ये ५ ते ६० वर्षे वयोगटतील मुली-महिलांचा सहभाग असायचा. २०१३मध्ये त्या कर्वेनगर परिसरात रहायला आल्या. २०१३पासून आजतागायत त्या फक्त ज्येष्ठ महिलांकरता विनामूल्य योगवर्ग चालवीत आहेत. याबद्दल २१ जून २०२२ रोजी योगसधना संस्थेतर्फे सन्मानचिन्ह देऊन त्यांचा सत्कार करण्यात आला. रोटरी क्लब ऑफ पुणे सहवास परिवारातर्फे ॲन जयश्रीताईं धुपकर यांचे मन:पूर्वक अभिनंदन!

विठ्ठल -एक ऊर्जास्रोत

विठ्ठल या शब्दामुळे, विठ्ठल शब्द उच्चारण्यामुळे, विठ्ठल नामाच्या टाहोमुळे, तनमनात एक विलक्षण आत्मविश्वास जागृत होतो. चैतन्याची निर्मिती होते. हजारो लाखो वारकरी तहान भूक विसरून विठ्ठलनामाचा गजर करत पंढरीची वारी करतात. गावागावातले आबालवृद्ध विठ्ठलनाम जपत पालखीत सामील होतात व वारकऱ्यांची सेवा करतात. यंदा, तसंच मागच्या वर्षी करोनाच्या संकटामुळे वारकरी वारीला जाऊ शकलेले नाहीत, पण मनानं ते आज आषाढी एकादशीला पंढरीला पोचले आहेत आणि विठूनामाच्या गजरात दंग आहेत. विठ्ठल विठ्ठल विठ्ठल असा तीन वेळा उच्चार केला तरी निर्माण होणारी उर्जा आणि तिच्या अनुभूतीचे वर्णन अनेकांनी विविध प्रकारे केले आहे.हृदयविकाराचा झटका आलेल्याने विठ्ठल नामाचा गजर प्रथमोपचार म्हणून करावा असे आपण वाचले असेलच...त्याविषयी सोशल मीडियावरही ऑडियो ..विझ्युअल स्वरूपात पाहिले असेल.

अनेक संत -कवी प्रभृतींनी लिहिलेले आणि भीमसेनजी-लता-आशा- बाबूजी- वसंतराव - किशोरीताई इत्यादि दिग्गजांनी गायलेले विठ्ठलाचे अभंग - भक्तिगीते आपण भावभक्तीने ऐकतो - गुणगुणतो. या विठ्ठल भक्तिगीतांचे, अभंगांचे आणि संत साहित्याचे अध्ययन वर्षानुवर्षे होत आहे, होत राहिल.

विठ्ठल - या शब्दाचा शब्दशः अर्थ विटेवर स्थल - वीटेवर स्थित. विठ्ठलनामाचा उद्घोषही किती वेगवेगळ्या पध्दतीने होतो - कुणी त्याला विठोबा म्हणतात तर कुणी विठू माऊली, ज्ञानेश्वर त्याला माझी विठाई तर तुकारामांची आवडी त्याला विठ्या आणी काही बाही म्हणते. कुणासाठी तो पांडुरंग आहे तर कुणासाठी पंढरीनाथ आहे. एका रचनेत त्याला पंढरीचा चोर तर एकात चक्क त्याला पंढरीचे भूत म्हटले आहे.

विष्णूसहस्रनामाप्रमाणे १६८ श्लोकांचे विठ्ठलसहस्रनाम हस्तलिखितात आहे असे मी कुठेतरी वाचले होते. विठ्ठलाची नावे द्वारकेश्वर, मुरलीधर, गिरीधर, कमलाबंधूसुखदा, पद्मावतीप्रियः, गोपीजनवल्लभ अशी कृष्णाशी मिळती जुळती आहेत.

कुणी त्याला काही म्हणो , महाराष्ट्रात शेकडो वर्षे विठ्ठलाची आणि विठ्ठलनामाची ऊर्जा जनतेला जागृत करत आहे आणि देश परदेशातील विद्वान विठ्ठलभक्तीने भारावून जाऊन वारीला जाणाऱ्या वारकरी संप्रदायाचा अभ्यास

करत आहेत.
विठ्ठलाच्या दर्शनासाठी आसुसलेल्या या लोकयात्रेत कितीही बाधा आल्या तरीही वारकरी भक्तांमध्ये जात पात नाही, उच्च-नीच नाही, गरीब-श्रीमंत कुठलाच भेदभाव नाही. विठ्ठल म्हणजे प्रेम, दया, माया, शांती यांचा मिलाफ.
विठ्ठल म्हणजे वासनेचा नाश आणि विकारांवर विजय. विठ्ठल म्हणजेच बंधुभाव विठ्ठल म्हणजेच सुखसमाधान, समता व समृद्धी.
लहानपणापासून गेली अनेक वर्षे आषाढात ग्यानबा तुकारामांच्या पालखीचे दर्शन चुकले नाही...गेली काही वर्षे वारीत टप्प्याटप्प्याने का होईना सहभागी होऊन भक्तिरसात न्हाऊन निघून ग्यानबा तुकारामांच्या व विठूमाऊलीच्या गजरात दंग झालो आहे.
मागील दोन वर्षे प्रत्यक्ष वारीत जरी सहभागी होता नाही आलं तरी, जवळंच विठ्ठलवाडीत जाऊन विठुरायाच्या देवळाचं बाहेरुन दर्शन घेऊन आलो होतो. या वर्षी मात्र परत सासवड ते जेजुरी हा वारीचा टप्पा मित्रमंडळींबरोबर पार केला आणि हरीपाठ भजनांवर ताल धरुन भक्तिरसात न्हाऊन आलो.
विठ्ठल-विठ्ठल गजरात आज पंढरीच काय, आख्खा महाराष्ट्र - प्रत्येक मराठी आणि अमराठी विठ्ठलभक्त मनोमनी बुडून गेला आहे आणि हाच विठुराया आपल्याला या परीक्षेच्या काळातून तारणार आहे.
हीच श्रद्धा व विश्वास मनात बाळगून प्रत्येक वारकरी , मराठी माणूस पुढची शेकडो वर्षे भजत रहाणार आहे....
.

आतां कोठें धावे मन| तुझे चरण देखलिया ||१||
भाग गेला सीण गेला | अवघा जाला आनंद ||२||
प्रेमरसें बैसली मिठी | आवडी लाठी मुखाशी ||३||
तुका म्हणे आम्हां जोगें | विठ्ठला घोगें खरें माप ||४||

पांडुरंग हरी वासुदेव हरी...
विठ्ठल विठ्ठल | जय हरी विठ्ठल ||

राहुल लाळे,
आषाढी एकादशी

Rotary District Conference 2023
21 & 22 Jan 2023
Aamby Vally, Lonavala
For Booking & Other Details
Contact our Club Rtn. Kiran Ingle

We meet at Dnyanada Prashala,
DP Road, Karvenagar,
Every Friday at 7.30 pm.

गुरु पौर्णिमा

सहवासीयहो,

आजच्या गुरुपौर्णिमेचा

कार्यक्रम "श्रीमद् भगवद् गीतेचे माहात्म्य" या अंतर्गत डॉ. शिरीष लिमये यांनी कर्म, धर्म, अध्यात्म यांच्यावर जे ओघवतं भाषण केलं त्याने आपणा साऱ्यांबरोबरच मीही मंत्रमुग्ध झालो.

कर्माचं, कर्मफळाचं महत्त्व विषद करताना त्यांनी कर्मकांडाच्या, दांभिकपणाच्या वर्मावर जे बोट ठेवलंय, त्यामुळे आज आपल्या सर्वांनाच एक नवीन दृष्टी मिळाली असेल यात शंका नाही. वेदव्यास यांचा जन्मदिवस.. आषाढी शुद्ध पौर्णिमा म्हणजे गुरुपौर्णिमा असं सांगणाऱ्या डॉ. लिमयेंच्या विवेचनातून मला पुढील मुद्दे महत्त्वाचे वाटले..

- व्यास... हे नाव नाही तर पदवी आहे, त्यांच्या नावाने पवित्र होते ते व्यासपीठ !
- व्यास म्हणजे जणू हिंदूधर्माचे निर्मातेच ..ज्यांनी अठरा पुराणं, भागवत, महाभारत लिहिले आणि त्याची अनूभूती अजूनही आपण घेत आहोत, त्यातला महाभारत या ग्रंथात एक लाख श्लोक आहेत, म्हणजे रामायणाच्या चौपट.
- महाभारत..उच्च विचाराची माणसं वेळप्रसंगी किती नीच वागू शकतात हे सांगतो तर भगवद् गीता कर्माचं महत्व सांगते.
- विवेकानंदांनी वनातले संन्यासी जनात आणले..धर्माचा उपयोग कर्मात आणला.
- सनातन तत्व...सनातन... ज्याला विरोध होऊ शकत नाही असा
- यशस्वी कोण ?... मनावर ताबा असणारा, इंद्रियांच्या घोड्यांचा लगाम ज्याच्या हातात आहे तो खरा यशस्वी !
- १९६५-६० दरम्यान...टी. एस. इलियट या ब्रिटिश कवीला गीता शिकावीशी वाटली, पण आपल्याकडच्या सोकॉल्ड हुशार माणसाला वाटत नाही हे दुर्भाग्य.

– गीता... वारंवार सलग गीता गीता असं म्हणलं की त्यागी त्यागी असा उच्चार होतो... गीता म्हणजे त्याग.

– गीता... जास्तीत जास्त विकत घेतला जाणारा , वाचला जाणारा जगातील दुसरा ग्रंथ!

– विवेकानंदांनी मॅक्समुल्लर ला गीता भेट दिली होती.

– सुखदुःख समे कृत्वा ...म्हणजे सुखदुःख समान मानणे हे अध्यात्म !!

– अध्यात्म म्हणजे ...Changing oneself..Changing my vision to look at others

–अध्यात्मात प्रगती कुठली?... अध्यात्म म्हणजे गती थांबवायची आहे.

– टिळकांनी तुरुंगात गीतारहस्य हा ग्रंथ लिहिला, गीता अशी आत्मसात की पुन्हा न पहाता लिहून काढतील.

– गीतेत मनाला उभारी देणारे श्लोक, त्यामुळेच स्वातंत्र्य सेनानी घडले.

...गीता म्हणजे पाचवा वेद... पंचम वेद..वेदांचा शेवटचा भाग...उपनिषदे...वेदांत

...उपनिषदांचं सार सांगणारा तो कृष्ण.

– शुध्द बुध्दीचा माणूसच गीता समजू शकतो.

– भगवानुवाच..गीतेत कृष्ण जे बोलतो ते .. जणू भगवंतांचेच विचार

– भागवतात मात्र श्रीकृष्ण उवाच...कृष्ण जे बोलतो ते .

– मनातल्या विचारांबरोबर वाहून न जाता, तटस्थपणे पहाणं, स्थिर राहणं हे गीतेचं सार, ते अध्यात्म

– कर्मात शरणागती हवी...हृदयात जाऊन वर्तनात येता आलं पाहिजे.

– विश्वास, भक्ती योग, कर्मयोग म्हणजे धर्म, म्हणजे अध्यात्म.

– समत्व म्हणजे योग...युज म्हणजेच ..जोडले जाणे, परमेश्वराशी जोडले जाणे म्हणजे योग!

– कर्माची संख्या वाढवणं म्हणजे कर्मयोग नाही... – कर्माला धर्माचं कवच असणं... म्हणजे कर्मयोग

– कर्म करताना इंद्रियांवर कंट्रोल हवा.

– वानप्रस्थाश्रम...withdrawlism – Detachment... ती कधी येणार?

– Children come through you but not from you – ते भगवंताचं देणं

–देव कुठल्या स्वरूपात समोर येईल माहीत नाही, त्यामुळे समोर येईल ती प्रत्येक व्यक्ती म्हणजे देव

– निर्हेतुक, तटस्थ होऊन कर्म केले पाहिजे

– मध्यम मार्ग... निष्काम कर्म म्हणजे धर्म

– फळ आणता येत नाही, फळ येत असतं.

– कर्म वर्तमानकाळात... फळ भविष्यकाळात ..त्यामुळे कर्म करताना फळाचा विचार नको.

– कर्मावर लक्ष...फळावर नको, कर्माचं फळ.. व्यक्ती सापेक्ष

– सुख दुखते ते कसलं सुख?

–सर्व स्वीकार व्रत...मन बळकट करणे

– फळ हा प्रसाद...प्रसादाला quality मूल्य आहे quantity मूल्य नाही.

किती सुंदर विचार आहेत !

प्रत्येक विचारावर एक निबंध लिहिता येईल..

डॉ. शिरीष लिमयेंचा कार्यक्रम ठेवल्याबद्दल रो. सुधीर, रो. पल्लवी, ॲन धनश्रीचे आभार!

रो. हेमंतने करून दिलेली ओळख व ॲन तारिणीचे आभारप्रदर्शनातून केलेले गुरुपूजन प्रभावी!

गुरु साक्षात परब्रह्म...तस्मै श्री गुरवे नमः !!

नमस्कार!

राहुल लाळे

Service Above Self !
One Profits Most, Who Serves Best !

मौनांची भाषांतरे

आजचा मौनाची भाषांतरे हा संदीप खरे यांचा गांधीभवन मधे संपन्न झालेला कार्यक्रम फारच अप्रतिम झाला. संदीपजींच्या कवितांनी आणि खुसखुशीत भाषेत त्यांनी केलेल्या विवेचनामुळे रसिक प्रेक्षकांनी खचाखच भरलेला गांधीभवन सभागृह भारावून गेला.
रो. दिलीप कुंभोजकर व शुभदा ताम्हणकर यांनी सूत्रसंचालन करुन संदीपजींचे काव्यवाचन प्रवाही ठेवले. गांधीभवनच्या प्रेसिडेंट रो.पद्मजा जोशी, कर्वेनगरचे प्रेसिडेंट रो. डॉ दिलीप कुलकर्णी व आपल्या सहवासचे प्रेसिडेंट रो. अजयजी मुटाटकर यांच्या हस्ते संदीपजींना मानपत्र देण्यात आले. ॲन तारिणीने आभारप्रदर्शन केले.

सर्व रसिक प्रेक्षकांनी या कार्यक्रमाबद्दल गौरवोद्गार व्यक्त केले.

Three cheers for
अजयजी आणि रोटरी सहवास !!!

Attending good programs, listening to brilliant speakers etc in place like Pune is not uncommon. **When YOU arrange and organise such events,** it's different. We had such experience 19th. July 2022 in watching **संदीप खरे** in breaking his silence by rendering his poems in over- filling Gandhi Bhavan Hall in his program **मौनांची भाषांतरे.** It was Synergy program with RC Gandhi Bhawan and RC Karvenagar. We honoured Sandip Khare with कलागौरव पुरस्कार.The only way to bring Non-Rotarian to your fold is to show them your projects and invite them for your interesting, entertaining programs.

काही क्षणचित्रे

जशने–जोष

RI President's Visit to Pune

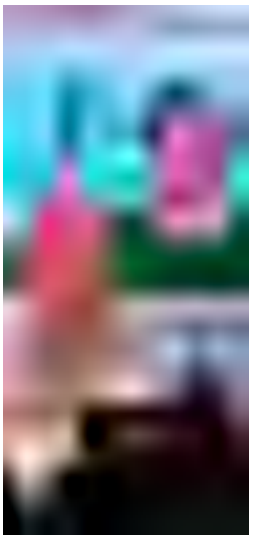

25th year of marriage of
RI President Jennifer Jones & Nick Krayacich
being celebrated in Indian Style in Pune

Rotary

IMAGINE ROTARY

आयोजन

RID 3131

Club Administration Seminar

Clubs will receive recognitions for effective Club Administration during Admin Seminar " **Aayojan** " **on 6th August evening.**

(Chief Guest)

Rtn. Aniruddha Roychowdhury
(Vice President)

Dr. Anil Parmar
(District Treasurer)

Rtn. Vivek Dixit
(District Chief Administrator)

The recognitions will be based on CPI from District Website

35 to 40 points - Silver Citation
41 to 50 points - Gold Citation
51 and above - Platinum Citation

Clubs will also be awarded for best bulletin in Print format and A/V format

- **Print format Best 3 - Silver medal**
- **A/V format Best 3 - Gold medal**

To get recognized you have to only upload your own bulletin on portal before **31st July**

Your Club - **Rotary Club of Pune Sahawas**
Co Host - **Rotary Club of Pune Phoenix**

Programs in August 2022

3rd Vidnyan Vahini Visit to Interact School
6th Club Admin Seminar
11th Raksha Bandhan at Paraplegic Center
12th RYE Students Meet
14th Synergy Program Shukrangan
15th Synergy Program 2
19th Mangalagaur
Details of Programs will be announced on Business Group

Hearty Congratulations Dear Shekharji Dhamale,
for receiving ***Idols of Maharashtra Awards*** from Sakal

नांदा सौख्यभरे !

रो. संतोष व ॲन सौ. स्वाती कोठाडिया यांचे सुपुत्र पुष्पल आणि श्री. देवाषिश व सौ. चित्रा गुहा यांच्या सुकन्या अनुश्री यांचा शुभविवाह २१ जुलै २०२२ रोजी घरगुती समारंभात संपन्न झाला. नवविवाहितांना रोटरी क्लबऑफ सहवासकडून हार्दिक शुभेच्छा!

औक्षवंत व्हा!

०२ ऑगस्ट- ॲन स्मिता गावसकर
०६ ऑगस्ट - ॲनेट इंद्रजित (रो. महेंद्र चित्ते यांचा सुपुत्र)
११ ऑगस्ट - ॲनेट कल्याणी (रो. विवेक गोखले यांची सुकन्या)
११ ऑगस्ट - ॲनेट पुष्पल (रो. संदेश कोठाडिया यांचा सुपुत्र)
१५ ऑगस्ट - ॲनेट शौर्य (रो. विजय मानकरी यांचा सुपुत्र)
१५ ऑगस्ट - ॲन अपर्णा मुटाटकर
१६ ऑगस्ट - रो. राहूल लाळे
१८ ऑगस्ट - ॲन मीना ढमाले
१८ ऑगस्ट - अण्णा धनेश शहा
२० ऑगस्ट - ॲन श्रद्धा पळसकर
२६ ऑगस्ट - ॲनेट शुभम् (रो. सुनिल बारसकर यांचा सुपुत्र)
२७ ऑगस्ट - ॲन अंतरा (रो. अनुराग फुले यांची सुकन्या)
२८ ऑगस्ट - ॲन ऐश्वर्या (रो. मिलिंद पंडित यांची सुकन्या)